सूरह — एक कहानी

सूरह अल-मसद

बटी हुई रस्सी

पूरा सफ़र — वो पेशीनगोई जिसका जवाब कभी नहीं दिया गया —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 111 • 5 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

तब्बत यदा अबी लहबिंव-व तब्ब

1. अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएँ, और वो हलाक हुआ।

मा अग़ना 'अन्हु मालुहू व मा कसब

2. उसका माल और उसकी कमाई उसके किसी काम न आई।

सयस्ला नारन ज़ाता लहब

3. अनक़रीब वो भड़कती आग में दाख़िल होगा।

वम्रअतुहू हम्मालतल्-हतब

4. और उसकी बीवी भी — लकड़ियाँ ढोने वाली।

फ़ी जीदिहा हब्लुम्-मिम्-मसद

5. उसकी गर्दन में बटी हुई रस्सी होगी।

सफ़ा पहाड़ी वाला चचा

बेटा, यह सूरह उस शख़्स के बारे में है जिसे दुनिया की हर चीज़ हासिल थी और उसने सब कुछ गँवा दिया — नबी ﷺ के अपने सगे चचा।

उनका असल नाम अब्दुल उज़्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब था, मगर लोग उन्हें अबू लहब कहते थे — 'आग का बाप' — क्योंकि उनका रंग बहुत चमकदार, सुर्ख़ी माइल और ख़ूबसूरत था। बेटा, यह लक़ब याद रखिए; यह सूरह इसी को उनके ख़िलाफ़ इस्तेमाल करेगी।

इस सूरह की कहानी उस दिन से शुरू होती है जिसका ज़िक्र सहीह बुख़ारी में है। अल्लाह ने नबी ﷺ को हुक्म दिया कि अपने क़रीब तरीन रिश्तेदारों को डराएँ। तो आप ﷺ सफ़ा पहाड़ी पर चढ़े और पुकारा: 'या सबाहाह!' — यह अरबों का वो क़दीम ख़तरे का नारा था जो सुबह सवेरे लुटेरे हमला करने आते तो लगाया जाता था। हर ख़ानदान से कोई न कोई आया, और पूरा क़ुरैश जमा हो गया।

आप ﷺ ने पूछा: 'अगर मैं तुम्हें बताऊँ कि वादी के उस पार एक लश्कर तुम पर हमले

के लिए तैयार है, तो क्या तुम मेरा यक़ीन करोगे?' सबने कहा: हाँ — हमने आपको कभी झूठ बोलते नहीं पाया।

बेटा, इस बात पर रुक जाइए: उनके अपने दुश्मनों ने सर-ए-आम उनकी सच्चाई की गवाही दी।

फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: 'तो मैं तुम्हें एक सख़्त अज़ाब से पहले डराने वाला हूँ।'

और अबू लहब — उनका अपना चचा, उनका अपना ख़ून — सबके सामने बोला: 'तब्बन लक! क्या तूने हमें इसी लिए जमा किया था?'

'तब्बन लक' का मतलब है: तू हलाक हो, तू बर्बाद हो।

और बेटा, अल्लाह ने जवाब दिया — उन्हीं के अल्फ़ाज़, उन्हीं पर पलट कर।

उसके हाथ टूट जाएँ

'तब्बत यदा अबी लहबिंव-व तब्ब — अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएँ, और वो हलाक हुआ।'

बेटा, आईना देखिए: उसने कहा 'तब्बन लक' — तू हलाक हो। अल्लाह ने जवाब दिया: 'तब्बत यदा...' — उसके हाथ हलाक हों। गाली उसी के भेजने वाले को वापस कर दी गई, और एक ऐसी किताब में महफ़ूज़ कर दी गई जो क़ियामत तक पढ़ी जाएगी।

और 'उसके हाथ' क्यों? बेटा, क्योंकि हाथ कोशिश और अमल की अलामत हैं — जो कुछ इंसान बनाता है, पकड़ता है, और जिससे वार करता है। और उसके हाथ वाक़ई मसरूफ़ थे: रिवायतों में है कि वो नबी ﷺ के पीछे पीछे महफ़िलों और बाज़ारों में जाते और लोगों से कहते कि इनकी बात मत सुनो, और आप ﷺ पर पत्थर फेंकते। तो अल्लाह ने उसकी मुख़ालफ़त के औज़ार का नाम लिया।

'मा अग़्ना 'अन्हु मालुहू व मा कसब — उसका माल उसके काम न आया, और न वो जो उसने कमाया।'

बेटा, 'मा कसब' — जो उसने कमाया — की तफ़्सीर में उलमा ने औलाद को भी

शामिल किया है, क्योंकि इंसान की औलाद भी उसकी कमाई में शुमार होती है। यानी जिन दो सुतूनों पर इंसान सबसे ज़्यादा टिकता है — पैसा और औलाद — दोनों को उसके लिए बे-कार क़रार दे दिया गया।

'सयस्ला नारन ज़ाता लहब — अनक़रीब वो भड़कती लौ वाली आग में दाख़िल होगा।'

और बेटा, यहीं वो बात है: 'ज़ाता लहब' — लौ वाली। जिस शख़्स को उसके चमकते ख़ूबसूरत चेहरे की वजह से 'अबू लहब', यानी आग का बाप कहा जाता था — वो बिल्कुल दूसरे माने में आग का बाप बनेगा। उसका लक़ब ही उसकी सज़ा बन गया।

लकड़ियाँ ढोने वाली

'वम्रअतुहू हम्मालतल्-हतब — और उसकी बीवी — लकड़ियाँ ढोने वाली — फ़ी जीदिहा हब्लुम्-मिम्-मसद — उसकी गर्दन में बटी हुई खजूर की छाल की रस्सी होगी।'

बेटा, उसकी बीवी उम्मे जमील थी — और वो कोई आम औरत नहीं थी। वो अबू सुफ़ियान की बहन थी, क़ुरैश के सबसे ऊँचे ख़ानदान से, मालदार, और अपने ज़ेवर की वजह से मशहूर। और वो अपने शौहर से कम नहीं थी इस दुश्मनी में।

'हम्मालतल-हतब' — लकड़ियाँ ढोने वाली — की दो तफ़्सीरें हैं, और दोनों उस पर पूरी बैठती हैं।

ज़ाहिरी माने में: रिवायतों में है कि वो रात को काँटों वाली टहनियाँ जमा करती और उस रास्ते पर बिखेर देती जहाँ से नबी ﷺ गुज़रते थे, ताकि उनके पाँव ज़ख़्मी हों। बेटा, उस बुग़्ज़ का अंदाज़ा कीजिए — एक दौलतमंद शरीफ़ ख़ानदान की औरत रात को निकल कर रास्ते पर काँटे बिछा रही है।

और मजाज़ी माने में: अरबी में लोगों के दरमियान 'लकड़ियाँ ढोना' चुग़ली करने को कहते हैं — क्योंकि चुग़ली दुश्मनी की आग को उसी तरह भड़काती है जैसे लकड़ी आग को। और वो यह काम भी करती थी, मक्का के घरों में बातें ले कर फिरती थी।

'उसकी गर्दन में मसद की रस्सी।' बेटा, 'मसद' खजूर की छाल की खुरदरी, बटी हुई

रस्सी है — मज़दूर की मोटी रस्सी — उन हीरों के हारों के बिल्कुल उलट जिनके लिए वो मशहूर थी। और रिवायत है कि उसने क़सम खाई थी कि वो अपना मशहूर हार बेच कर मुहम्मद ﷺ की मुख़ालफ़त पर ख़र्च करेगी।

तो जिस औरत ने दीन से लड़ने के लिए अपना हार उतारा, उसकी गर्दन में रस्सी का ज़िक्र किया गया। बेटा, इस सूरह का हर जुमला ठीक निशाने पर बैठा है।

वो पेशीनगोई जिसकी तर्दीद कभी नहीं हुई

और अब बेटा, इस सूरह की सबसे हैरत-अंगेज़ बात — और यह वो चीज़ है जो आप किसी भी शख़्स को बता सकते हैं जो पूछे कि आप क़ुरआन को अल्लाह की तरफ़ से क्यों मानते हैं।

यह सूरह, मक्का के बीच में, आने वाले ज़माने के बारे में एलान कर देती है कि अबू लहब कुफ़्र की हालत में मरेगा और आग में जाएगा।

अब सोचिए, बेटा। अबू लहब इस सूरह के नाज़िल होने के बाद तक़रीबन दस साल और ज़िंदा रहा। उन दस सालों के हर दिन, उसके हाथ में इस्लाम को मुकम्मल और हमेशा के लिए ख़त्म कर देने का सबसे आसान तरीक़ा मौजूद था।

उसे बस इतना कहना था: 'मैं इस्लाम क़ुबूल करता हूँ।'

एक जुमला। उसे दिल से मानना भी ज़रूरी नहीं था। वो सर-ए-आम, क़ुरैश के सामने कलमा पढ़ लेता, और फिर एलान कर देता: देखो — तुम्हारे क़ुरआन ने कहा था कि मैं काफ़िर मरूँगा और जलूँगा। वो ग़लत निकला।

बेटा, वो इस पैग़ाम का ख़ात्मा होता। कोई दलील इससे सँभल नहीं सकती थी। और अबू लहब वो शख़्स था जिसने अपनी ज़िंदगी के दस साल और अपना माल इसी दीन को मिटाने में लगाया — उसके पास दुनिया भर के महरिकात मौजूद थे।

उसने कभी ऐसा नहीं किया। दस साल दरवाज़ा खुला रहा, और वो कभी उसमें दाख़िल नहीं हुआ। बद्र के बाद वो एक ऐसी बीमारी से मरा जिसे छूने से उसके अपने घर वाले डरते थे।

बेटा, कोई झूठा शख़्स किसी ज़िंदा दुश्मन के बारे में ऐसी पेशीनगोई नहीं लिखता जिसे जाँचा जा सके, और फिर उसी दुश्मन को दस साल दे देता कि चाहो तो झुठला लो। यह सूरह एक खुला चैलेंज है जिसका आज तक जवाब नहीं दिया गया।

और बेटा, एक दूसरा सबक़ है, और वो भारी है। किसी नेक शख़्स से क़ुर्बत किसी को नहीं बचाती। यह शख़्स नबी ﷺ का चचा था। उसी शहर में रहता था, उन्हीं गलियों में चलता था, बचपन से उन्हें जानता था। उसके भाई अबू तालिब ने आप ﷺ की हिफ़ाज़त की; उसके दूसरे रिश्तेदार — हम्ज़ा और अब्बास (रज़ि0) — इस्लाम के सुतून बने। एक ही ख़ानदान, एक ही ख़ून, एक ही रसाई।

बेटा, हिदायत विरासत में नहीं मिलती। वो नाम, ख़ानदान या 'दीनदार घराने से होने' के ज़रिए मुंतक़िल नहीं होती। हर जान अल्लाह के सामने अकेली खड़ी होगी, उस चीज़ के साथ जो उसने ख़ुद चुनी।

और एक तीसरा सबक़, और यह सबसे ख़ूबसूरत है। बेटा, देखिए कि अबू लहब के अंजाम ने क्या नहीं किया: इसने नबी ﷺ को अपने बाक़ी रिश्तेदारों के साथ सख़्त, तल्ख़ या बद-गुमान नहीं बनाया। आप ﷺ ज़िंदगी भर अपने लोगों को नर्मी से बुलाते रहे।

तो बेटा, जब आपके अपने रिश्तेदार दीन के मामले में आपकी मुख़ालफ़त करें — और बहुत लोगों के लिए सबसे सख़्त मुख़ालफ़त घर के अंदर से ही आती है — तो यह सूरह याद कीजिए। सच साफ़ कह दीजिए, फ़ैसला अल्लाह पर छोड़ दीजिए, और अपना अख़लाक़ सलामत रखिए।

इस सूरह से क्या सीखा

1. उसके दुश्मनों ने भी गवाही दी कि उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला — ऐसी साख़ बनाइए जो आपके बोलने से पहले बोल दे।

2. माल और औलाद उसके काम न आए: जिन दो चीज़ों पर इंसान सबसे ज़्यादा टिकता है, वही बे-कार क़रार दी गईं।

3. 'लकड़ियाँ ढोने' से बचिए — चुग़ली दुश्मनी की आग को उसी तरह भड़काती है जैसे लकड़ी आग को।

4. यह एक पेशीनगोई है जिसे झुठलाने के लिए दुश्मन को दस साल और हर महरिक मिला — और वो कभी न कर सका।

5. हिदायत विरासत नहीं होती: एक ही ख़ानदान से अबू लहब भी निकला और हम्ज़ा व अब्बास (रज़ि0) भी।

6. रिश्तेदारों की मुख़ालफ़त इस दीन का सबसे पुराना इम्तिहान है — सच कहिए और अपना अख़लाक़ मत छोड़िए।

7. किसी का लक़ब, मर्तबा, ख़ूबसूरती और नसब अल्लाह के हाँ उसके मक़ाम में कोई फ़र्क़ नहीं डालते।

या अल्लाह, हमें अपने हक़ की मुख़ालफ़त से बचाइए, और हमारे हाथों से वो बनवाइए जो उस दिन हमारे काम आए। आमीन।